License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

होशे 1:1–3:5

होशे ने न्याय और आशा के संदेश उत्तरी राज्य के लोगों को दिए। उन्होंने कुछ संदेश कविताओं के रूप में बोले और कुछ संदेश भविष्यद्वाणी के कार्यों के माध्यम से बाटें।

होशे ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया कि किस से विवाह करना है और उनके बच्चों का क्या नाम रखना है। उनका विवाह और उनके बच्चों के नामकरण भविष्यद्वाणी के कार्य थे। होशे ने एक ऐसी स्त्री से विवाह किया जिसने अन्य पुरुषों के साथ यौन संबंध बनाए। वह एक वेश्या की तरह व्यवहार करती थी। यह इस बात का चित्रण था कि उत्तरी राज्य के लोग परमेश्वर के साथ कैसे व्यवहार करते थे।

परमेश्वर उनके प्रति वैसे ही विश्वासयोग्य थे जैसे होशे अपनी पत्नी गोमेर के प्रति विश्वासयोग्य थे। लेकिन लोग परमेश्वर के प्रति वैसे विश्वासयोग्य नहीं थे जैसे गोमेर होशे के प्रति विश्वासयोग्य नहीं थी। होशे और गोमेर के बीच विश्वासयोग्यता का मतलब था कि वे केवल एक-दूसरे के साथ ही यौन संबंध बनाएं। परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के बीच विश्वासयोग्यता का मतलब था कि परमेश्वर के लोग केवल परमेश्वर की ही उपासना करें। इसका मतलब था कि वे मूसा की व्यवस्था का पालन करें जो सीनै पर्वत की वाचा में दर्ज है।

होशे ने अपने बच्चों को ऐसे नाम दिए जिनका अर्थ था प्रेम नहीं किया गया और मेरी प्रजा नहीं। ये नाम इस बात का चित्रण थे कि परमेश्वर अपनी प्रजा के साथ कैसा व्यवहार करेंगे। वे उनके साथ ऐसा व्यवहार करेंगे मानो वे उनकी प्रजा नहीं हैं जिन्हें वे प्रेम करते हैं। इसका अर्थ यह है कि वे उनके साथ ऐसा व्यवहार करेंगे मानो सीनै पर्वत की वाचा टूट गई हो। वाचा ने दिखाया कि परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब की वंशावली को चुना। उन्होंने उन्हें याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र बनने के लिए चुना। इसी प्रकार परमेश्वर ने उनके प्रति अपना प्रेम प्रकट किया।

लेकिन उत्तरी राज्य के लोग झूठे देवता की पूजा करते थे, जिसे बाल कहा जाता था। ऐसा था मानो वे भूल गए थे कि परमेश्वर उनके परमेश्वर थे। परमेश्वर ने कभी अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्यता नहीं छोड़ी। परमेश्वर ने वादा किया था कि एक दिन इस्राएल उन्हें प्रभु के रूप में पहचानेंगा। परमेश्वर के लोग वाचा की आशीषों का आनंद लेंगे। उनकी अगुवाई दाऊद की वंशावली के एक राजा द्वारा की जाएगी।

यहूदी इन आशा के संदेशों को मसीहा के बारे में भविष्यद्वाणियों के रूप में समझने लगे। नए नियम के लेखकों को यह समझ में आ गया कि यीशु ही मसीहा हैं।

होशे 4:1–14:9

उत्तरी राज्य के लोगों और अगुवों ने परमेश्वर से प्रेम नहीं किया था। उन्होंने उनके प्रति विश्वासयोग्यता नहीं दिखाई थी। जिस प्रकार से परमेश्वर ने इसे समझाया, वह ऐसा था जैसे उनके खिलाफ अदालत में आरोप लगाना। परमेश्वर ने उन पर सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य न होने का आरोप लगाया।

उत्तरी राज्य के लोग और अगुवे परमेश्वर का सम्मान परमेश्वर के रूप में नहीं करते थे। वे चोरी करते और झूठ बोलते थे। वे हत्या और व्यभिचार करते थे। ये बातें दस आज्ञाओं के विरुद्ध थीं। परमेश्वर के लोगों के आचरण से उनके चारों ओर की भूमि और पशुओं को नुकसान हुआ। इससे यह दिखा कि वे परमेश्वर की सृष्टि के शासक के रूप में कार्य नहीं कर रहे थे जैसा उन्हें करना चाहिए था।

उन्होंने झूठे देवताओं के लिए ऊँचे स्थानों पर धूप जलाई। उन्होंने मनुष्यों की हत्या की और उन्हें झूठे देवताओं के लिए बलिदान किया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि परमेश्वर के लोग यह नहीं समझ पाए कि परमेश्वर कौन हैं। वे यह नहीं समझ पाए कि वे कैसे चाहते हैं कि उनकी आराधना करी जाए।

याजकों ने मूसा की व्यवस्था का पालन करने में लोगों का अगुवाई नहीं की। कई भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों से सत्य नहीं कहा। परमेश्वर के लोगों ने उन भविष्यद्वक्ताओं का मजाक उड़ाया जिन्होंने सत्य कहा। राजाओं और राजकुमारों ने परमेश्वर के उन नियमों का पालन नहीं किया जो राजाओं के लिए व्यवस्थाविवरण 17:14–20 में दर्ज हैं। वे अपनी बड़ी सेनाओं और अन्य राष्ट्रों की सेनाओं की शक्ति पर निर्भर रहे। वे मिस्र और अश्शूर जैसे राष्ट्रों पर भरोसा करते थे कि जब उन पर हमला हो तो वे उन्हें बचाएंगे। जब उन्हें मदद की जरूरत होती, तो वे परमेश्वर को कभी नहीं पुकारते थे।

इन सभी कारणों से, परमेश्वर ने एक निर्णय लिया। वे अब वाचा के श्रापों को उन पर आने से नहीं रोकेंगे। वे उत्तरी राज्य को अश्शूर की सेनाओं द्वारा नष्ट होने की अनुमति देंगे। उत्तरी राज्य के लोग और अगुवे भयंकर कष्ट सहेंगे। कई मारे जाएंगे और कई लोग को अपनी भूमि छोड़ने के लिए मजबूर किया जाएगा। उन्हें अश्शूर और अन्य राष्ट्रों में रहने के लिए मजबूर किया जाएगा। यह उत्तरी राज्य की बंधुवाई थी।

परमेश्वर इस निर्णय से बहुत दुखी थे। वे नहीं चाहते थे कि ऐसा हो। वे अपने लोगों को आशीष और चंगा करना चाहते थे और उन्हें सफलता देना चाहते थे। लेकिन वे ऐसा तभी कर सकते थे जब वे अपने तरीके बदलें और सही और न्यायपूर्ण कार्य करें। वे ऐसा कर सकते थे यदि वे यह पहचानें कि वो ही परमेश्वर हैं। वे ऐसा कर सकते थे यदि वे उनसे क्षमा मांगें। यही कारण था कि परमेश्वर ने होशे के माध्यम से उन्हें संदेश भेजे।

होशे *4:1–14:9*

परमेश्वर समझ गए थे कि उनके लोग उनके पास वापस लौटने से इनकार कर रहे थे। वे अपने पूरे मन से पाप का पश्चाताप करने से इनकार कर रहे थे। लेकिन परमेश्वर का हृदय उनके प्रति भलाई, करुणा और दया से भरा हुआ था। उन्होंने स्वयं को इस्राएल के पिता के रूप में वर्णित किया। परमेश्वर अपने पुत्र के प्रति कोमल और दयालु थे। वे नहीं चाहते थे कि उनका पुत्र नाश हो जाए।

परमेश्वर ने न्याय के समय के बाद कुछ वादा किए। उन्होंने अपने लोगों को बंधुवाई से वापस लाने का वादा किया। तब वे परमेश्वर का विश्वासयोग्यता से अनुसरण करेंगे और वह उन्हें स्वतंत्र रूप से प्रेम करेंगे।